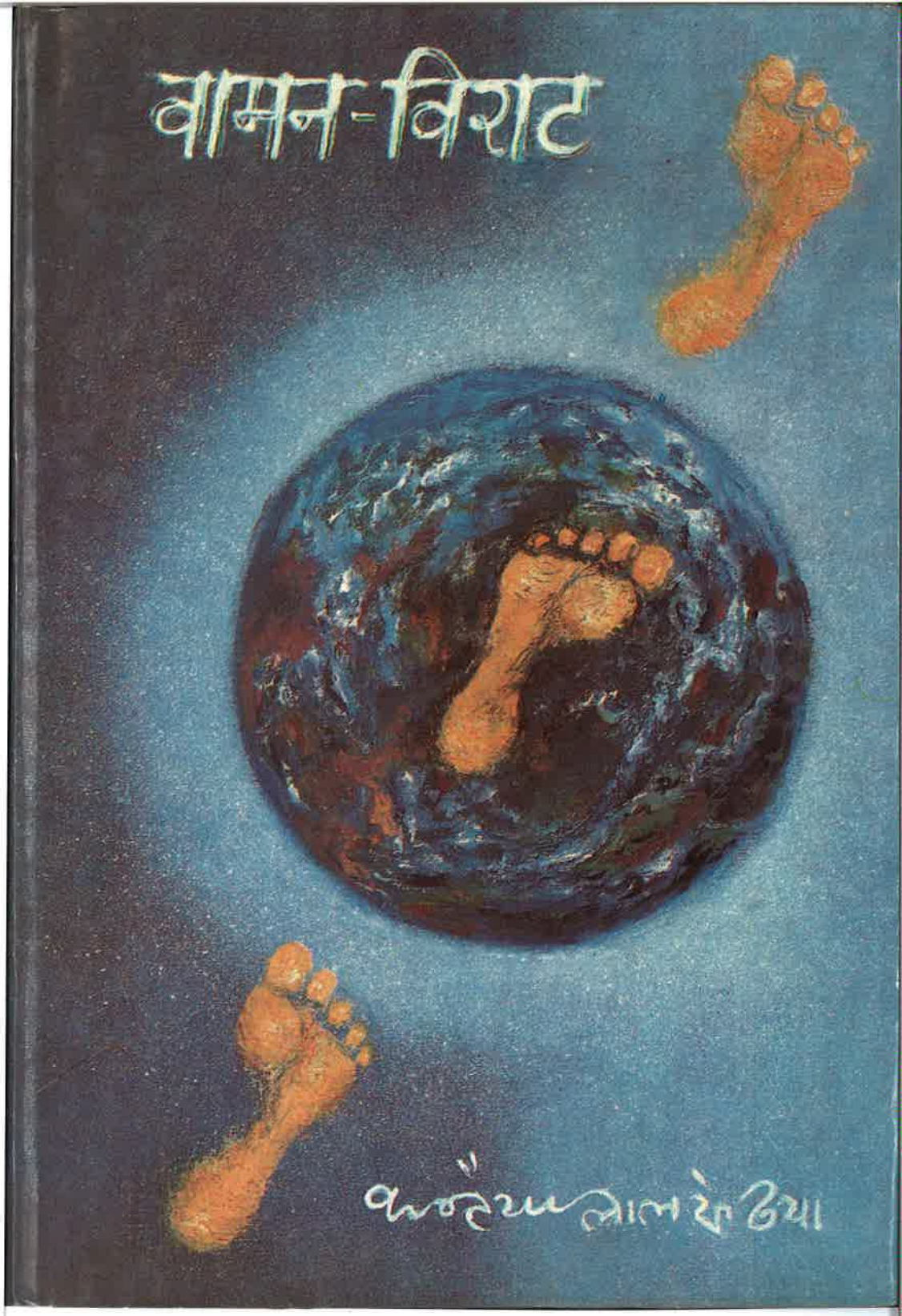

वामन-विराट
कन्हैयालाल सेठिया

प्रवेश

विराट वामन बन कर ही लीला कर सकता है
अन्यथा वह तो स्वयं अमंचीय है।
विटप बीज में, सत्य शब्द में समाकर ही
फल और अर्थ देता है,
यह अनुभूति ही इस कृति की अभिव्यक्ति है।

११ सितम्बर, १९९१